Date ______ Page ____

प्रस्तावना:-
आधुनिक वैज्ञानिक, भौतिकवादी एवं बौद्धिक युग में पाठशाला संचालन एक ज्वलंत समस्या बन गई है अतः इस विषय पर गंभीरता से चिन्तन की महती आवश्यकता है, क्योंकि हमारी बाल व युवा पीढ़ी ही इस परम पवित्र जिन-शासन की पताका को आगे फहरायेगी। यह उन्हीं का कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्व है परन्तु उन्हें यह कर्त्तव्यबोध कैसे हो यह जिम्मेदारी हमारी है, अन्यथा इसके भीषण दुष्परिणाम होंगे, बाद में पछताने के सिवा कुछ भी नहीं बचेगा।

आइये ! हम इस विषय पर विचार-विमर्श करते हैं:- सर्वप्रथम यह समझना होगा कि पाठशाला संचालन का उद्देश्य क्या है ? उद्देश्य निर्धारण इस प्रकार से होगा:-

1. प्रथमतः जैन धर्म की अनादि-अनंतता सिद्ध करते हुये, जैनधर्म की महिमा से अवगत करना चाहिये.
2. वीतरागता-सर्वज्ञता आदि के आधार से अन्यधर्म-दर्शनों से सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करना.
3. भगवान महावीर की प्रमुख शिक्षाओं के माध्यम से जैनधर्म की महानता से अवगत करना.
4. मूल उद्देश्य- अनादिकालीन दुःखों से मुक्ति अर्थात् अक्षय सुख की प्राप्ति.
5. बालकों का लौकिक जीवन सदाचारमय, शांतिमय बने, इसीसे अभिभावकों का जीवन भी शांतिमय एवं समाधिपूर्वक होगा.

इत्यादि अनेक उद्देश्य हो सकते हैं।

पाठशाला के अध्यापक की विशेषताऐं :-

किसी भी गतिविधी को संचालित करने हेतु एक कुशल संचालक की आवश्यकता होती है अतः पाठशाला हेतु हमें ऐसे योग्य शिक्षक की जरुरत होगी, जिसमें अनेक गुण-विशेषताऐं होना चाहिये, उनमें मुख्य निम्नांकित हैं:-

1. पाठशाला के निर्धारित पाठ्यक्रम की सांगोपांग जानकारी हो।
2. विषय प्रस्तुतीकरण की शैली सरल, उत्तम व आकर्षक हो.
3. प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त हो.
4. चारों अनुयोगों का सामान्य व समन्वित ज्ञान हो.
5. अति-विनम्र, व्यवहार-कुशल, समय-पाबन्द, शीलवान, सदाचारी, स्व-अनुशासित आदि गुणों से युक्त हो.
6. जैन-श्रावकाचार का यथायोग्य पालन करता हो :- जैसे समस्त अभक्ष्य पदार्थों का त्याग, रात्रि भोजन का त्याग, छने जल का प्रयोग, बाजारु भोजनादि का त्याग, आदि। यदि स्वयं जीवन में सदाचार न हो तो वह बालकों को कैसे संस्कारित करेगा।
7. अति उत्तम होगा कि वह समाज से अर्थ-निरपेक्ष हो, उसकी आजीविका हेतु समाज के लोग स्कूल आदि में शिक्षण की स्वतंत्र सर्विस रखें या वह स्वयं कोई रोजगार करने में सक्षम हो।
8. कुशल शिक्षण के साथ प्रसंगानुसार प्रेरकप्रसंग, कथाऐं, उदाहरण एवं कहानियां आदि प्रस्तुत कर सके।
9. स्वयं सच्चा आराधक हो, क्योंकि वही प्रभावना में सशक्त कारण बन सकता है

Date ______ Page ___

पाठशाला की शिक्षण पद्धति:-

यह वर्तमान युग की प्रबल आवश्यकता है, ताकि बच्चों को हर-संभव जैनदर्शन व जैनाचार के संज्ञान हेतु प्रेरित किया जा सके। इसके लिए अग्रांकित प्रणाली अपनाई जा सकती है।

1. प्रतिदिन शिक्षण का ही कार्य न किया जाकर उसे सप्ताह के दिनों में विभक्त कर दिया जाये- जैसे- दो या तीन दिन शिक्षण कार्य, एक दिन कथा कहानी व प्रेरक प्रसंग, एक दिन कंठपाठ, एक दिन भजन गायन (भक्ति) एकांकी संवाद आशुभाषण वाद-विवाद प्रति., गोष्ठी प्रश्न-मंच, अन्ताक्षरी आदि विविध कार्यक्रम, बच्चों की संख्या व उम्र के अनुसार किसी दिन खेल-कूद का आयोजन (यथासंभव).
2. प्रतिदिन शिक्षण कार्य में इलेक्ट्रोनिक संसाधन, जैसे- कम्प्यूटर लेपटॉप प्रोजेक्टर व मोबाइल का उपयोग किया जाये, क्योंकि बच्चे वर्तमान में स्कूल में भी इनका प्रयोग कर रहे हैं।
3. साप्ताहिक सामूहिक पूजन का आयोजन- बच्चों को प्रक्षाल एवं पूजन की सम्यक विधी, पूजन के अंग इत्यादि से परिचय कराना,
4. हमारे धार्मिक पर्व- जैसे- दशलक्षण, अष्टान्हिका, वीर निर्वाणपर्व, महावीर जन्मकल्याणक क्षमावाणी श्रुतपंचमी वीर-शासन जयन्ति, अक्षय तृतीया रक्षाबन्धन आदि की ऐतिहासिकता, प्रासंगिकता व महत्व समझायें एवं यथासंभव बच्चों को भी इन आयोजनों में उपस्थित होने की प्रेरणा दें। कुछ अन्य तथाकथित पर्व जो कि गृहीत मिथ्यात्व का पोषण करते हैं- जैसे सुगन्धदशमी, रविव्रत रोठतीज शनि-अमावस्या, वर्तमान में प्रचलित नई विधि शांतिधारा आदि का जिनागम की साक्षीपूर्वक निषेध किया जावे ताकि इन गलत परम्पराओं के पालन से होने वाले पाप से बचा जा सके।

5. बालकों को प्रसंगानुकूल विभिन्न विडियो (जो वर्तमान में प्रचुर उपलब्ध हैं) के माध्यम से - आतिशबाजी, पतंग, होली आदि त्योहारों से होने वाली हानियों को दिखाना, अभक्ष्य पदार्थों की निर्माण पद्धति आदि दिखाकर, जो बालक स्वयं प्रतिज्ञाबद्ध हो, उन्हें पुरस्कृत किया जाये.

6. जैन श्रावकाचार पालन हेतु बाध्य नहीं किया जाये, अपितु वे स्वयं स्वरुप समझकर, स्वप्रेरित होकर इस हेतु प्रतिज्ञाबद्ध हों, अन्यथा प्रतिज्ञाभंग का महादोष उपस्थित हो जायेगा.

7. माह में एक बार (यथासंभव) निकटतम जिनमंदिर, अतिशय-क्षेत्र आदि जाकर वहां जिनेन्द्र पूजन-भक्ति, मंदिर-जिनवाणी की वैयावृत्ति आदि बच्चों के साथ स्वयं भी करें, साथ ही बच्चों को पंक्तिबद्ध बैठाकर नाश्ता-भोजन आदि में झूठन न छोड़ने की प्रेरणा दें। पानी छानने की विधि को प्रैक्टिकल करके समझायें।

8. वर्ष में एक बार किसी सिद्धक्षेत्र या तीर्थक्षेत्र की वंदना का कार्यक्रम हो, जिसमें बच्चों के साथ अभिभावक, गण्यमान्यजन एवं विशिष्ट विद्वान भी उपस्थित रहें।

9. ग्रीष्मावकाश या अन्य अवकाश में वर्ष में एक बार 8-10 दिन का बाल-शिविर का आयोजन एवं इसी अवसर पर बच्चों की वर्ष भर की दैनंदिन गतिविधियों के पारितोषिक बच्चों के उत्साहवर्धन हेतु किया जावे।

10. पाठशाला संचालन को अत्यन्त महत्वपूर्ण गतिविधी समझकर इसके लिए आर्थिक-प्रबन्ध में कोई कमी नहीं रखी जाना चाहिये। संभवतः यह गतिविधी हमारी समस्त गतिविधियों की आधारशिला है.

11. इस प्रकार 'पाठशाला' की उपयोगिता प्राचीन गुरुकुलों से कम नहीं है।

उपसंहार :-

वर्तमान में वृहद् नगरों में दूरियां बढ़ जाने से बच्चे उपस्थित नहीं हो पाते हैं। इसका एक मात्र उपाय यही है कि हम जिस कॉलोनी में रहते हैं, उसी में स्थित जिन-मन्दिर में प्रारम्भ करें, चाहे बच्चों की संख्या कम ही क्यों न हो? अथवा सामाजिक परिस्थिति के कारण यदि मंदिर में संभव न हो सके तो किसी भी साधर्मी के घर से ही इस गतिविधी को प्रारम्भ करें। जिस प्रकार किसी पौधे की टहनी को प्रारम्भ में ही अपनी इच्छानुसार मोड़ा जा सकता है, बड़ा वृक्ष बनने के बाद नहीं, उसीप्रकार बालकों में उनकी छोटी उम्र में ही संस्कार रोपित किये जा सकते हैं, क्योंकि अभी उनकी मस्तिष्क रुपी स्लेट खाली है, बड़े होने के बाद संभव नहीं होता।

विकृत लौकिक शिक्षा प्रणाली (कोन्वेन्ट) के कारण छोटे बच्चों पर शिक्षा के नाम पर भारारोपण किया जा रहा है, इतना ही नहीं, स्कूल से लौटने के बाद कोचिंग के नाम पर बच्चों पर अत्याचार किया जा रहा है, जो कि किसी भी स्थिति में उचित नहीं कहा जा सकता। इन सब विषम परिस्थितियों में छोटे बच्चों तक को पाठशाला आने का समय नहीं है, लेकिन इसके लिए अभिभावकों को भी जागरुक होना होगा, यदि वे स्वयं भी संस्था की दैनिक गतिविधियों में उपस्थित नहीं होते हैं, तो उपस्थित हों ताकि वे भी इसकी अनिवार्यता महसूस कर सके।

अतः सम्पूर्ण जैन-समाज को एकजुट होकर इस ओर ध्यान देने की महती आवश्यकता है, क्योंकि जबतक हमारे बच्चे-युवा जैन-दर्शन के सिद्धान्तों व नैतिक संस्कारों से परिचित नहीं होंगे, तबतक हमारे सिद्धक्षेत्र, तीर्थक्षेत्र, वृद्ध जिनायतन, एवं संकुल आदि की सुरक्षा अत्यन्त खतरे में है।

इसके साथ हमें हमारे घर-परिवार, समाज, देश एवं सम्पूर्ण विश्व में यदि शांति-समृद्धि का साम्राज्य स्थापित करना है उसकी नींव पाठशाला ही है। अन्यथा इसके भयावह दुष्परिणाम होंगें, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। अतः यह तो निर्विवाद सत्य है कि पाठशाला ही एक मात्र वर्तमान एवं आगामी समस्त समस्याओं का समाधान है।

प्रेषक-
सुरेन्द्र कुमार जैन, कोटा
मोन. 8209139844